



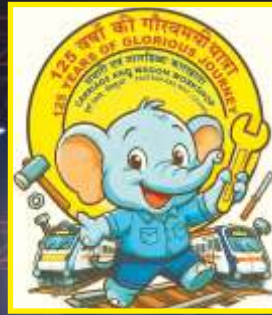
वर्ष 2026

अंक - प्रथम

नारिक्का



सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना लिलुआ की गृह पत्रिका



संरक्षक

यतीश कुमार
मुख्य कारखाना प्रबंधक



प्रधान संपादक

अश्वनी कुमार
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर
(बीएमएफ, बजबज)



संपादक

पंकज मण्डल
कनिष्ठ अनुवादक

सह-संपादक

पुनम सोनकर
कनिष्ठ अनुवादक

सहयोग

हिंदी बढ़ रही है समूह

संपर्क सूत्र

संपादक : हिंदी अनुभाग
सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना
पूर्व रेलवे, लिलुआ
फोन - 7980019279/8777482509

अनुरोध

कारखाना सहित रेल परिवार से संबंधित सभी व्यक्तियों की रचनाओं का स्वागत है। यदि आप कहानी, कविता, लेख एवं संस्मरण, नाटक आदि लिखते हैं तो आप हमें अपनी रचनाएं व्हाट्सएप, ईमेल के जरिए भेज सकते हैं या हिंदी अनुभाग में भी जाकर दे सकते हैं। रचनाएं मौलिक होनी चाहिए।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृ.सं.
1.	शुभकामना संदेश		3
2.	स्त्री	यतीश कुमार	4
3.	लिलुआ कारखाना : 125 वर्षों की गौरवमयी स्वर्णिम यात्रा	अश्वनी कुमार	5
4.	मानवता	संगीता रॉय	6
5.	बचपन	आलोक कुमार गुप्ता	6
6.	जीवन की लहरें	संगीता रॉय	7
7.	खूबसूरती	रॉकी कुमार 'आर्य'	7
8.	जब तुम थे/हकीकत	पूर्णेदु शेखर सिन्हा	8
9.	नीलकण्ठ	राजकुमार	9
10.	रेलवे कर्मचारी	रामबिलास कुमार	9
11.	आँसू	माधवी गुप्ता	10
12.	जीवन-मृत्यु	राज्यवर्द्धन	10
13.	तुम सब का साथ	रविकांत चौधरी	11
14.	माँ	जयनारायण चौधरी	11
15.	डॉ. भीमराव आंबेडकर: भारत में सामाजिक न्याय के वास्तुकार	अमृता कुमारी	12
16.	बुजुर्गों का सम्मान	अनिरुद्ध राज गुप्ता	13
17.	दार्जिलिंग की सैर	मनोज कुमार गोप	14
18.	कौशलमय कारखाना	रवि कुमार	15
19.	बारिश का दर्द	आदित्य राज गुप्ता	15
20.	नेताजी का दिखावा	रमेश कुमार प्रसाद	16
21.	स्वच्छ धरती	अनन्या कुमारी	16
22.	शहर में गाँव की यादें	गोपाल कुमार	16



यतीश कुमार**YATISH KUMAR**

मुख्य कारखाना प्रबंधक

Chief Works Manager



समाडि कारखाना/C&W Workshop,

पूर्व रेलवे /Eastern Railway,

लिलुआ / Liluah,

हावड़ा / Howrah- 711 204

Tel. No. 033- 2654 6449

FAX No.033-2654 9357



शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सवारी एवं मालडिब्बा कारखाना, लिलुआ- भारतीय रेल की औद्योगिक विरासत का उज्ज्वल प्रतीक—अपने समर्पण, नवाचार और कर्मठता के साथ 125 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा पूर्ण कर चुका है। यह उपलब्धि पीढ़ियों की मेहनत, तकनीकी उत्कृष्टता और राष्ट्रसेवा की भावना का सजीव प्रमाण है। इस गौरवशाली यात्रा के केंद्र में कारखाने के कर्मठ कर्मचारी रहे हैं। इंजीनियर, तकनीशियन, कारीगर और अधिकारी—सभी ने मिलकर इसे केवल एक उत्पादन इकाई नहीं, बल्कि एक जीवंत संस्थान बनाया। इसने स्थानीय समाज, रोजगार सृजन, कौशल विकास और सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लिलुआ कारखाना का योगदान केवल मालडिब्बों तक सीमित नहीं रहा, हमने सवारी की सभी डिब्बों जैसे एलएचबी, आईसीएफ पर भी गहरी पकड़ रखी है। लिलुआ कारखाना ने अभी हाल ही में वंदे-भारत ओएच का भी लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। शिक्षा, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, सामुदायिक विकास और अत्याधुनिक तकनीक एवं सर्वाधिक सौर ऊर्जा के क्षेत्र में कारखाना की पहलें इसे एक जिम्मेदार सार्वजनिक संस्थान के रूप में स्थापित करती हैं।

इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर लिलुआ कारखाने के सभी पूर्वजों, वर्तमान कर्मचारियों और नेतृत्व को नमन एवं हार्दिक बधाई। यह गौरवमय परंपरा यून ही आगे बढ़े और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहे।

(यतीश कुमार)

मुख्य कारखाना प्रबंधक



यतीश कुमार

मुख्य कारखाना प्रबंधक
पूर्व रेलवे, लिलुआ



नन्ही परी का सिर सहलाता हूँ
वह मेरी हथेली
अपनी उँगलियों में लपेट लेती है

मुझे लगता, ईश्वर ने मेरा हाथ थामा है
निःशंक सोते देखता हूँ
जब पत्नी को तो पृथ्वी नीमनींद सी शान्त
लगती है
जबकि पलकों में उसकी
घर की सारी बलाएँ कैद रहती हैं

इस समय ईश्वर नींद से गुजर रहा होता है

जब माँ को सोते हुए देखता हूँ
तो लगता है
ईश्वर नींद में भी सबके लिए
उतना ही चिन्तित है

जीवन में समस्त ऊर्जा स्रोत
जिन-जिन स्त्रियों से मिलता रहा
उनकी जागती-सोती आँखों से
मैंने प्रार्थनाओं से भरा स्वर्ग देखा है

ईश्वर मिथक नहीं सच है
और आपके इर्द-गिर्द हाथ थामे
यक्रीन दिलाता है
कि ईश्वर कोई पुरुष नहीं होता



लिलुआ कारखाना : 125 वर्षों की गौरवमयी स्वर्णिम यात्रा

अश्वनी कुमार
उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर
(बीएमएफ, बजबज) एवं
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
पूर्व रेलवे/लिलुआ



भारतीय रेल के औद्योगिक इतिहास में लिलुआ कारखाना एक ऐसा नाम है, जिसने अपने श्रम, तकनीकी दक्षता और सतत नवाचार से राष्ट्र की सेवा में एक सदी से भी अधिक समय तक अमूल्य योगदान दिया है। गौरव का विषय है कि लिलुआ कारखाना अपने स्थापना के 125 गौरवमय वर्ष पूर्ण कर चुका है। यह अवसर केवल एक संख्या का नहीं, बल्कि परंपरा, प्रतिबद्धता और निरंतर प्रगति की एक ऐतिहासिक यात्रा का प्रतीक है।

सन् 1900 के आसपास स्थापित यह कारखाना प्रारंभ से ही भारतीय रेल की आवश्यकताओं को पूरा करने में अग्रणी रहा है। यात्री एवं माल डिब्बों के निर्माण, मरम्मत और आधुनिकीकरण के क्षेत्र में लिलुआ कारखाने ने समय-समय पर अपनी तकनीकी क्षमता का परिचय दिया। बदलती तकनीक, बढ़ती अपेक्षाओं और सुरक्षा मानकों के अनुरूप स्वयं को ढालते हुए इस कारखाने ने भारतीय रेल की रीढ़ को मजबूत किया है। यह उन असंख्य कर्मठ कर्मचारियों, अभियंताओं और अधिकारियों की साधना का परिणाम है, जिन्होंने पीढ़ी-दर-पीढ़ी निष्ठा और समर्पण के साथ कार्य किया। कठिन परिस्थितियों, सीमित संसाधनों और जटिल चुनौतियों के बावजूद यहाँ के मानव संसाधन ने गुणवत्ता और समयबद्धता से कभी समझौता नहीं किया।

वर्तमान युग में लिलुआ कारखाना डिजिटलीकरण, अत्याधुनिक विनिर्माण तकनीकों, ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी निरंतर अग्रसर है। स्वदेशीकरण, गुणवत्ता सुधार और सुरक्षा उन्नयन जैसे राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति में इसकी भूमिका उल्लेखनीय रही है। हाल ही में वंदे-भारत ओएच में भी हमने दुर्लभ लक्ष्य साधने में सफलता प्राप्त की है। यह कारखाना 'आत्मनिर्भर भारत' की भावना को धरातल पर साकार करने का एक सशक्त उदाहरण है।

125 वर्षों की यह यात्रा अतीत के गौरव, वर्तमान की जिम्मेदारी और भविष्य की संभावनाओं का संगम है। यह अवसर आत्ममंथन का भी है और संकल्प का भी—कि लिलुआ कारखाना आनेवाले वर्षों में भी भारतीय रेल और राष्ट्र निर्माण में अपनी अग्रणी भूमिका निभाता रहेगा।

इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर लिलुआ कारखाने से जुड़े सभी वर्तमान एवं पूर्व कर्मियों को हार्दिक बधाई। यह गौरवमय परंपरा यँही आगे बढ़े और आनेवाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहे।

मानवता

संगीता रॉय

सदस्या (पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन)

पूर्व रेलवे, लिलुआ



एक दिन कुछ भी शेष नहीं रहेगा, जीवन थम जाएगा फिर भी जीवन में इतनी प्रतिस्पर्धा क्यों? अन्याय, अत्याचार, हिंसा और संघर्ष क्यों? दूसरों को धकेलकर, रौंदकर आगे बढ़ने की ये कैसी कोशिश? दूसरों की जगह लेने के लिए इतनी चालाकी और छल-कपट, इसे कैसी शिक्षा कहा जाए? जिनके पास प्राथमिक शिक्षा भी नहीं है, वे किस बात के योग्य हैं?

ज़ोर-ज़बरदस्ती से चाहे कोई खुद को कितना ही बड़ा दिखाने की कोशिश करें, ऐसे स्वार्थी और नपुंसक लोग समाज के लिए कोई अच्छा संदेश नहीं दे सकते। इन्हें रोकना ज़रूरी है, जिससे समाज की संरचना सही बनी रहे। मनुष्य को अपने साथ-साथ दूसरों के बारे में भी सोचना चाहिए। किसी के साथ अन्याय करने से पहले एक बार अवश्य सोचना चाहिए। अन्यथा वे किस तरह के इंसान हैं? क्या वे प्रेम करना जानते हैं? या अभिनय करते-करते निज मन को खो बैठे हैं एवम मानवीय मूल्यों को समझने की क्षमता भी खो चुके हैं?

सच्ची शिक्षा हमारे ज्ञान के भंडार को प्रकाशित करती है, सही और गलत का अंतर समझाती है। शिक्षा मनुष्य को विनम्र बनाती है, अहंकारी नहीं। अहंकार मनुष्य को विवेक हीन बना देता है, अहंकार के नशे में मनुष्य अपनी मानवता भी खो बैठता है। शिक्षा का प्रकाश सामाजिक ढांचे की काली छाया को दूर करने की क्षमता रखता है और जिस दिन यह प्रकाश समाज की संरचना के हर कोने तक पहुँच जाएगा, उस दिन सारी समस्याएँ सुलझ जाएँगी, सब कुछ वैसा ही होगा जैसा होना चाहिए।

किसी को ऊपर से आंकने की कोशिश मत करो, ऊपर से किसी इंसान का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। अगर मन अच्छा हो और इंसान अच्छा हो, तो यह सब करना बहुत आसान हो जाएगा। तब सामने सही रास्ता और दिशा दिखाई देगा, जो तुम्हारे लिए भी सही होगा और दूसरों के लिए भी। यदि तुम अपनी इच्छा से ही गलत रास्ता चुनते हो, तो जटिलताएँ दिन प्रतिदिन बढ़ती जाएँगी, हर दिन उलझनें और भी बढ़ेंगी। अशांति, हिंसा, कलह और संकीर्णता तुम्हारा जीवन, तुम्हारे आसपास के लोगों के जीवन भी दुश्वार कर देगी। जीने का रास्ता ढूँढते-ढूँढते तुम और भी गहरे अन्याय एवम अंधकार में डूबते चले जाओगे। झूठा बड़प्पन, झूठा अहंकार की चादर ओढ़े मनुष्य सफल होने के नशे में कब अपनी ही मनुष्यता खो देता है, यह वह स्वयं भी नहीं समझ पाता।

तुम अपने जीवन में सफल हो या असफल, अपनी मनुष्यता को कभी मत त्यागना। सभी के बीच मानवीयता को बनाए रखना। जो तुम्हारे अपने मन की दृष्टि में तुम्हें विजयी बनाए, वही सच्ची सफलता कहलाएगी।

बचपन

आलोक कुमार गुप्ता

वरिष्ठ लेखापाल, लेखा विभाग

पूर्व रेलवे, लिलुआ



कहाँ गए वो दिन,
जब रोता था मैं, सब फुसलाने आते,
चिंता थी नहीं, जब मन सोने चले जाते।
बारिश की प्यारी बूंदों में, अलग मज़ा था नहाने का,
Twinkle Twinkle में ही, अलग मज़ा था गाने का।
खिलौना एक टूटता नहीं, कि दूसरा था हाजिर,
कह देता था जो मैं, करता नहीं था उसपे कोई मुनाजिर।
वो अलग समय नहीं, अलग जमाना था,
अलग पंक्ति नहीं थे ये, अलग ही अफसाना था।
मेरा, तुम्हारा, हम सबका,
बचपन, हमारे खुशियों और मुस्कानों का खजाना था।

जीवन की लहरें

संगीता रॉय

सदस्या (पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन)

पूर्व रेलवे, लिलुआ



समुद्र की लहरें जब पहाड़ जैसी विशाल आकृति लेकर दूर से गर्जना करती हुई आती हैं और धीरे-धीरे छोटी होती हुई तट पर आकर टकरा जाती हैं, तब हम उसे देखकर आनंदित होते हैं। जितनी बड़ी लहर होती है, उतना ही अधिक आनंद और उतनी ही सुंदर अनुभूति होती है।

लेकिन जब इंसान की आशाओं और सपनों के पहाड़ इसी तरह टूटकर चूर-चूर हो जाते हैं, तब मन में जमा उम्मीदों का पहाड़ तट पर आकर बिखर जाता है। दिन के अंत में निराशा और विषाद के सिवा कुछ भी शेष नहीं रह जाता। मानो उन लहरों की तरह सब कुछ खोकर इंसान खाली हाथ लौट आता है। आशाएँ टुकड़ों में बिखर जाती हैं, सपने चकनाचूर हो जाते हैं, और इंसान निःस्व होकर रह जाता है। फिर भी जीवन की लहरें बार-बार आती हैं। हर टूटन अपने साथ एक सीख छोड़ जाती है। हर असफलता मन को थोड़ा और मजबूत बनाती है।

समय के साथ इंसान यह समझने लगता है कि सपनों का टूटना ही अंत नहीं होता, बल्कि वही नए रास्तों की शुरुआत भी बनता है। जो कल तक असहनीय पीड़ा लगती थी, वही आज अनुभव बनकर जीवन को दिशा दिखाती है।

जिस प्रकार समुद्र की लहरें टूटकर भी समुद्र का अस्तित्व समाप्त नहीं कर पातीं, उसी तरह टूटे हुए सपने भी इंसान के जीवन के उद्देश्य को समाप्त नहीं कर सकते। लहरें फिर उठती हैं, फिर गर्जना करती हैं, और फिर उत्साह से तट से टकराती हैं।

मनुष्य भी बार-बार गिरकर उठता है, हर बार पहले से अधिक परिपक्व होकर। यही जीवन की सच्चाई है—टूटना, संभलना, फिर से उठना, आगे बढ़ना और आगे बढ़ते जाना।

खूबसूरती

सबसे खूबसूरत होता है
मैले-कुचैले बाप का
अपने बेटों को स्कूल पोशाक पहनाकर
कंधे पर ले जाना

सबसे खूबसूरत होता है
अपने ही बुराईयों को सुधारते हुए
अपने आप को सजा देने में
जरा भी न हिचकना।

सबसे खूबसूरत होता है
अपनी ही माँ से अपनी बेबसी
छुपाकर, आँखों में नदियाँ समाकर
उनके बातों पर हंस देना।



रॉकी कुमार 'आर्य'

कारखाना सहायक, एल शॉप
पूर्व रेलवे, लिलुआ

जब तुम थे

मेरे प्यार, एक तुम्हारे वास्ते ही मैं अपना शहर छोड़ के आई थी,
 तुम्हारे लिए ही सारे रिश्ते-नातों से मुंह मोड़ के आई थी !
 तेरे साथ गुजरे सुनहरे पलों का दुबारा फिर कभी वो दौर ना आयेगा,
 जिस दिल में तुम रहते थे कभी उस दिल में अब कोई और ना आयेगा !
 तुम थे तो खुशियां थी, तुमसे ही आंखों में कुछ अधूरे सपने थे,
 तुम थे तो अमावस की रात में चमकते सब सितारे अपने थे !
 तुम थे तो मेरे जीवन में सतरंगी खुशियों की हंसती बहार थी,
 तुम थे तो आरजू थी मन्नतें थी, बहती सदा प्यार की बहार थी ।
 जब से गए मुझे तनहा छोड़कर, जीवन में कभी ना पूरी होने वाली कमी है !
 जिन आंखों में ख्वाहिशें थी कभी, उन आंखों में हमेशा रहती अब नमी है !
 दर्द तो तब भी होता था पर तुम सदा चट्टान-सा मेरे पास होते थे,
 हमारे गम को खुशियों में बदल देते थे जब भी हम उदास होते थे !
 डर तो अब भी हमें लगता है जब बरसात में बिजली जोरों से चमकती है,
 अधूरा महसूस करती हूं जब किसी के माथे का सिंदूर व बिंदिया हंसती है !
 दिल का दर्द कोई नहीं समझता जब मेरी खामोश आंखें हंसती हैं !
 उन्हें अब मैं कैसे समझाऊं कि इस दिल में तेरी रूह अब भी बसती है !
 अब भी हर शाम को तेरे दीदार को मेरी आंखें तरसती हैं,
 अब नहीं कोई मेरा वजूद ना तुम्हारे बिना मेरी कोई हस्ती है !
 किस को अपना हाल ए दिल सुनाऊं किसको अपना दर्द दिखाऊं,
 तुम्हारे छुअन के मीठे एहसास को अब फिर मैं कहां से पाऊं !



पूर्णंदु शेखर सिन्हा
 सहायक कार्मिक अधिकारी (भर्ती)
 पूर्व रेलवे कोलकाता

हकीकत

सीधी सरल कविता में भी समाहित कई राज होते हैं,
 बिस्तर में पड़ी सिलवटों के भी कई हमराज होते हैं !
 महसूस करें मौन में शामिल अनकही बातों को जनाब,
 खामोशियों में भी छुपे हुए कई कई अल्फाज होते हैं !
 मत उड़िये किसी मासूम परिंदे सा नीले आसमान में,
 दबोचने के लिए आतुर वहां जालिम शाहबाज होते हैं !
 अपनी ख्वाहिशें सदा सीने में दफन करके रखते हैं,
 गरीबों के नादान बच्चों के अरमान बेआवाज होते हैं !
 आरजू सबके दिलों में होती है अमृता को पाने की,
 गरल पीने वाले इस जहां में कुछ ही जांबाज होते हैं !
 मछली की आंख भेदने के सपने कई आंखों में पलते हैं,
 पर अर्जुन सा लक्ष्य भेदने वाले कम ही तीरंदाज होते हैं !
 सबके अपने दर्द हैं और बयां करने के जुदा अंदाज हैं,
 जहां में हर फन में बेमिसाल कई शायरबाज होते हैं !



नीलकण्ठ

राजकुमार

तकनीशियन-1, एमआर शॉप
एयर ब्रेक, पूर्व रेलवे, लिलुआ



खुदा ने कहा भगवान से, हम दोनों बनाए गए हैं इंसान से,
फर्क सिर्फ इतना है, तुम पूजे जाते हो हिन्दू से
और हम मुसलमान से,

ओ नीलकण्ठ, तेरा कंठ है नीला
क्योंकि तूने विष पिया,
पर आज मानव विषधर हो गया,
उसने क्या पिया?
जो राह चलते को डस लेता है,
क्या तूने उसे कुछ खिलाया?
त्राहि एक बार तूने किया
पर यहां मानव ने हर बार किया,
यह घृत कारनामा
क्या तूने कुछ सिखाया?
कहलाते हो स्वयंभू,
शंकर और भोला
अगर देने लगो कुछ
तो लोग फैलाएंगे झोली नहीं झोला
हम बोलते हैं बोल बम
वो छोड़ देते हैं बम
निरीह निसहायो का
निकल जाता है दम,
लोग आते हैं, आंखों में आंसू भर कर
कहते हैं चल भाई संभल कर
मानव कुछ नहीं करता
जो होना होता है वही होता है
क्योंकि तू है संहारकर्ता
क्या तेरा है ये करम
कि लोगों का है ये भरम
ओ सत्यम शिवम सुंदरम
ओ सत्यम शिवम सुंदरम!!!

रेलवे कर्मचारी

रामबिलास कुमार

कारखाना सहायक, एम शॉप
पूर्व रेलवे, लिलुआ



लोहा से रेल बनाने वाली
कलाकारी है जी।
हां हम कर्मचारी हैं जी,
बहुते आज्ञाकारी हैं जी
हां हम कर्मचारी हैं जी।
रेलवे कर्मचारी हैं जी।।
हां हम कर्मचारी हैं जी..

आई.सी. एफ कोच चलाए
एल. एच. बी को सरपट दौड़ाए
लगजरी और हवा हवाई
वंदे भारत भी अब हमारी है जी
हां हम कर्मचारी हैं जी
बहुते आज्ञाकारी हैं जी
हां हम कर्मचारी हैं जी
रेलवे कर्मचारी हैं जी
हां हम कर्मचारी हैं जी।।

रात चाहे दो बजे हों
नींद से लड़ाई है जी।।
गर्मी चाहे हो बरसात
फिर भी रफ्तार जारी है जी।
सबको सुरक्षित पहुंचाने की।।
हमारी जिम्मेदारी है जी
हां हम कर्मचारी हैं जी
बहुते आज्ञाकारी हैं जी।
हां हम कर्मचारी हैं जी
रेलवे कर्मचारी हैं जी
हां हम कर्मचारी हैं जी।।

पूरे देश में जाल बिछाए
सबको समय पर पहुंचाए।
अमृत भारत की झलक दिखाए
खुद समय से पहुंच ना पाए।
सबको पीछे छोड़ने वाली।।
बुलेट ट्रेन की बारी है जी
हां हम कर्मचारी हैं जी।
बहुते आज्ञाकारी हैं जी।
हां हम कर्मचारी हैं जी।
रेलवे कर्मचारी हैं जी।

आँसू

माधवी गुप्ता

पत्नी- अंकेश कुमार
काधी, पीई कार्यालय
पूर्व रेलवे, लिलुआ



आँसू एक बूंद नहीं एक बहाव है
मन के व्याकुलता की, असमंजस की,

आँसू सिर्फ आँखों का पानी नहीं
भावनाएं हैं मन के असहजता की

आँसू एक ठहराव है मन के पीड़ा की
बोझ है भीतर छिपे तूफान की

आँसू कायरता नहीं सुकून है मन के उलझन की, मन के विचलन की
आँसू अध्ययन है खुद में बदलाव की, प्रेरणा है फिर से जीने की

आँसू से डबडबाई आँखें हैं अनकही सिसकियां, महसूस है सहजता की
आँसू कुछ क्षण का समाधान है तमाम अधैर्य, तमाम कशमकश की

बह जाने दो न बांधो इसे बेड़ियां
बह जाने दो तुम मन के घाव के दाग को

जब भी कचोटे तुम्हारा सहमा सा मन
आए जो बिन बात आँसू तुम्हारे आँखों में

न सोचो तुम कमजोर हो जो निकले आँखों से आँसू किसी के सामने

बह जाने दो वो सारी भावनाएं
खुद को न दो कभी कोई सांत्वना

तुम्हारी उड़ान में जो बाधा बने
बह जाने दो न रोको कभी

खुद से लिखो तुम अपनी कहानी
बह जाने दो तुम अपने आँखों से पानी।

जीवन-मृत्यु



राज्यवर्द्धन

भूतपूर्व व. सेक्शन इंजीनियर (यांत्रिक)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

तुमने कहा था-

जीवन सत्य है

जीवन यथार्थ है

मृत्यु जीवन का लक्ष्य नहीं

पर

जब सम्मुख हो मृत्यु तो

वह विराट प्रतीत होती है

'महाशून्य' सी

जीवन हाथ जोड़े खड़ा रहता है

सिराहने

एक कतरा साँस की भीख मांगता

मृत्यु के समक्ष

स्वीकारना पड़ता है सत्य कि

जीवन के दर्शन से कहीं बड़ा है

बहुत बड़ा है

मृत्यु का दर्शन

महाकाश की तरह

जीवन तो बस

टिमटिमाता सितारा है

धर्म, अर्थ, काम, पुरुषार्थ

सारे के सारे अकड़

यहीं के यहीं धरे रह जाते हैं!

(रवि-कवि) रविकांत चौधरी
तकनीशियन-1, के शॉप
पूर्व रेलवे, लिलुआ



तुम सब का साथ

वक्त की मार ने हम पर सितम कर दिया,
कुछ ख़ुबसूरत साथ हमसे जुदा कर दिया,

सपने थे हमारे, कि साथ अवकाश लेंगे,
हंसते-मुस्कुराते एक-दूसरे का दर्द बांट लेंगे।

साथ नौकरी में नियुक्ति मिली,
साथ ही इस नौकरी से अवकाश लेंगे।

किन्तु काम की कमी और साथियों का दूसरे शॉप जाना,
अपने सुखद पलों का इस कदर बिखर जाना।

जिसकी कभी कल्पना न हो, वो दर्द मिल जाना,
वो हंसी के ठहाके, वो मस्ती और मजाक में खो जाना।

चेहरों पर मायूसी और दिल में उदासी छाई है,
लिलुआ, रेल कारखाना में ये कैसी विपदा आई है।

अब इस पलायन को कोई तो रोक लो,
हम कमियों के दर्द के बारे में कोई तो सोच लो।

मेरी यह कविता उन साथियों को समर्पित है, जो अपने
जीवन का एक लम्बा समय लिलुआ कारखाना के एक शॉप
में बिताने के बाद दूसरे शॉप में ट्रांसफर हो गए।

माँ

जयनारायण चौधरी
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर, के शॉप
पूर्व रेलवे, लिलुआ



फूलों जैसी हँसती-खिलती
सबसे ज्यादा प्यारी माँ
फूलों सी मुस्काती रहती
सबसे ज्यादा प्यारी माँ।।

सूरज की किरणों की जैसी
अंधेरा दूर भगाती माँ
राह दिखाती, हमें समझाती
सबसे ज्यादा प्यारी माँ।।

वो हँसती हँसाती हमें बताती
जीवन कैसे जीना है
गलत राहों से हमें बचाती
सच राहों पर चलना सिखाती
सबसे ज्यादा प्यारी माँ।।

हर कदम पर साथ निभाती
सुख आने पर न इतराती
कभी न कुछ बोलती, समझाती
सबसे ज्यादा प्यारी माँ।।

दुख आने पर अडिग रहना सिखाती
घर आँगन परिवार संभालती
कैसे आगे बढ़ना है, समझाती
सबसे ज्यादा प्यारी माँ।।

एक मुसीबत से बदल गया जग
तब सबसे आगे रहती माँ
हमें समझाती, हौसला देती
सबसे ज्यादा प्यारी माँ।।

सफल हुआ जग मुस्काया
तनिक भी न इतराती माँ,
सफलता से न इतराना समझाती
सबसे ज्यादा प्यारी माँ।।

डॉ. भीमराव आंबेडकर: भारत में सामाजिक न्याय के वास्तुकार

अमृता कुमारी

कनिष्ठ लिपिक, सीएमएस
पूर्व रेलवे, लिलुआ



न्याय हमेशा समानता के विचार को जन्म देता है- “डॉ. भीमराव आंबेडकर”

डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर जो कि बाबासाहब आंबेडकर के नाम से लोकप्रिय थे, भारत के एक प्रसिद्ध राजनीतिक नेता, लेखक, दार्शनिक, न्यायविद, बहुभाषाविद, अर्थशास्त्री तथा भारतीय समाज सुधारक थे। उन्होंने जाति, तथा वर्ण पर आधारित तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था को बदलने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया तथा भारत में जाति व्यवस्था, छुआछूत, भेदभाव जैसी समस्याओं के उन्मूलन में अभूतपूर्व प्रयास किया। इसके साथ ही उन्होंने दलितों के अधिकार, मानवाधिकार, श्रमिकों एवं महिलाओं के अधिकार, राजनीति के विभिन्न मुद्दों जैसी जटिल विषयों के लिए भी संघर्ष किया तथा भारत में सामाजिक न्याय के बीज बोने का प्रयत्न किया।

प्रारंभिक जीवन:- डॉ. भीमराव आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को महू, मध्य प्रदेश में एक सैनिक छावनी में हुआ था। उनके पिता रामजी सकपाल ब्रिटिश सेना में सूबेदार मेजर थे तथा माता भीमाबाई थी। आंबेडकर का जन्म महार जाति के परिवार में हुआ जिन्हें उस समय 'दलित' अथवा 'अछूत' माना जाता था।

दलित होने के कारण उनका बचपन अत्यंत कठिनाईपूर्ण एवं भेदभाव से भरा रहा। प्रारम्भिक जीवन में ही उन्हें अनेकों भेदभाव एवं अपमान का सामना करना पड़ा परंतु उन्होंने कभी हार नहीं मानी तथा शिक्षा को अपना सबसे बड़ा हथियार बनाया। मुंबई के एल्फिंस्टन हाईस्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले वे उस समय के एकमात्र अछूत छात्र थे। पढ़ाई में अच्छे होने के नाते उन्होंने प्रोत्साहन राशि प्राप्त करके कोलम्बिया यूनिवर्सिटी, न्यूयॉर्क से अर्थशास्त्र में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। लंडन स्कूल ऑफ ईकनामिक्स से 'डॉक्टर ऑफ साइंस' की उपाधि प्राप्त करने वाले दुनिया के प्रथम व्यक्ति बने। आंबेडकर के पास 32 डिग्रियाँ थी तथा वे 9 भाषाओं के बेहतर जानकार थे।

सामाजिक न्याय के संबंध में आंबेडकर के विचार:- सामाजिक न्याय के लिए आंबेडकर का दृष्टिकोण सभी नागरिकों को स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व को बढ़ावा देता है। आंबेडकर ने एक ऐसे सामाजिक व्यवस्था की वकालत की जिसमें किसी व्यक्ति को दर्जा उसके द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धि एवं योग्यता के आधार पर दी जाएगी तथा कोई भी व्यक्ति जन्म से अछूत अथवा महान नहीं होगा।

सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने तथा हाशिये पर पड़े समुदायों की उन्नति के लिए बाबा साहब आंबेडकर ने अपना तर्क प्रस्तुत किया। उन्होंने सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों की प्रगति करने का भी प्रयास किया।

सामाजिक न्याय के संबंध में आंबेडकर के प्रयास:- बाबा साहब आंबेडकर ने अपना संपूर्ण जीवन सामाजिक सुधार, भेदभाव उन्मूलन, हाशिये पर पड़े समुदायों की प्रगति जैसे महान कार्यों में समर्पित कर दिया। संविधान के मसौदा समिति के सदस्य के रूप में भारत रत्न भीमराव आंबेडकर महत्वपूर्ण योगदान दिए। उन्होंने संविधान में सामाजिक न्याय (अनुच्छेद 39), समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14-18), स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 19-21) इत्यादि जैसे कई महत्वपूर्ण अधिकारों को सुनिश्चित किया।

सामाजिक न्याय के रूप में उनके द्वारा किये गये कुछ प्रयास निम्नलिखित हैं:-

- I. **अस्पृश्यता के खिलाफ आंदोलन**-भारत शासन अधिनियम 1919 के मसौदा समिति के समक्ष उन्होंने दलित वर्ग तथा अन्य धार्मिक समुदायों के लिए एक पृथक निर्वाचिका की माँग की।
- II. **शिक्षा का प्रयास**-बॉम्बे हाई कोर्ट में वकालत के दौरान बाबासाहब आंबेडकर ने अछूतों को शिक्षित करने तथा उनकी स्थिति में सुधार का प्रयास किया। इस दिशा में उनका पहला संगठित प्रयास 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का गठन था जिसका उद्देश्य अछूतों, बहिष्कृत तथा वंचित वर्गों को शिक्षित करना तथा उनका अधिकार सुनिश्चित करना था।
- III. **साहित्य के रूप में क्रांति लाने का प्रयास**-आंबेडकर जानते थे कि तात्कालिक सामाजिक स्थिति में सुधार उस समय के राजनीतिक नेताओं द्वारा ही संभव है अतः उन्होंने विभिन्न समाचार पत्र, सम्मेलनों तथा सभाओं का आयोजन करके अछूतों एवं पीड़ितों को संगठित करने का प्रयास किया। पत्रिकाओं जैसे- प्रबुद्ध भारत, मूकनायक, इक्वालिटी इंडिया इत्यादि इस दिशा में एक सकारात्मक कदम था। उन्होंने कई पुस्तकों की भी रचना की जैसे एन्निहिलेशन ऑफ़ कॉस्ट, बुद्धा एंड हिज धम्म इत्यादि।
- IV. **महिलाओं की स्थिति में सुधार**-आंबेडकर किसी समाज की प्रगति उस समाज में उपस्थित महिलाओं की स्थिति देखकर निर्धारित करते थे। उन्होंने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी कई सराहनीय योगदान दिए।
- V. **आरक्षण नीति**- भारत रत्न आंबेडकर भारत के पिछड़े समुदाय, हाशिये पर पड़े समुदाय तथा सामाजिक, आर्थिक रूप से वंचित वर्गों के लिए आरक्षण नीति की शुरुआत की।
- VI. **प्रारूप समिति के सदस्य के रूप में**- डॉक्टर बाबासाहब आंबेडकर संविधान सभा के प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। उन्हें संविधान का वास्तुकार माना जाता है। उनके नेतृत्व में बनाए गए संविधान सभा में स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय, भेदभाव निषेध इत्यादि जैसे अधिकारों की वकालत की गई एवं नागरिकों को सभी मौलिक अधिकार सहित अन्य अधिकार प्रदान किये गए।

बाबा साहब आंबेडकर सही मायनों में सामाजिक न्याय के वास्तुकार हैं। उन्होने छुआछूत भेदभाव और अस्पृश्यता उन्मूलन इत्यादि जैसे सामाजिक कुरीतियों के लिए जीवन पर्यंत संघर्ष किया है। उनके प्रयासों का ही परिणाम है कि आज भारत में दलितों की स्थिति में कई सुधार देखने को मिल रहा है। उनके प्रयासों से ही आज भारत के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति के रूप में एक दलित महिला को देख पा रहे हैं। आज के युवाओं को आंबेडकर के पथ पर तथा उनकी तरह दृढ़ संकल्प होकर सोचने की आवश्यकता है, जिससे वर्तमान समाज में व्याप्त कुरीतियों, अलगाववाद, सांप्रदायिकतावाद इत्यादि जैसे अमानवीय स्थितियों से साहसपूर्ण, दृढ़ संकल्प होकर लड़ सके। डॉक्टर भीमराव आंबेडकर भारतीय युवाओं के प्रेरणास्रोत हैं तथा उन्होंने भारतीयों को एक संविधान सभा जैसे विरासत को प्रदान किया है जो हर तरीके से मानवीय यथोचित एवं अधिकारों से पूर्ण है।

बुजुर्गों का सम्मान

अनिरुद्ध राज गुप्ता, वर्ग-5
पुत्र- आलोक कुमार गुप्ता
वरिष्ठ लेखापाल,
पूर्व रेलवे, लिलुआ



आज ये कविता मैं उन्हें समर्पित करता हूँ,
अपनी श्रद्धा को उन्हें, अर्पित करता हूँ।
जो तुम्हारी तोतलाहट से समझ लेते थे तुम्हारी आहट,
आज उन्हें तुमसे बात करने में, क्यों होती है घबराहट,
स्थिति कैसी भी हो, रखते थे तुम्हें Comfort Zone में,
और तुमने क्या किया? भेज दिया उन्हें Old Age Home में।
जो रात भर जागता था तेरे बीमार होने पर,
उनके कंधे को भूल गए तुम एक कार होने पर।
आओ, चलो बदले हम अपना विचार,
बुजुर्गों का हो आदर एवं सम्मान,
निभाएं हम अपना कर्तव्य अपार।

दार्जिलिंग की सैर

मनोज कुमार गोप

तकनीशियन ग्रेड-1

एम शॉप, लिलुआ कारखाना

कुछ महीने पहले की ही बात है साथियों। एक दिन मैं रोज की तरह अपने काम से घर वापस लौट रहा था तो किताबों की एक दुकान में रखी एक किताब के शीर्षक पर जब मेरी नजर ठिठकी तो मेरे चलते कदम खुद व खुद रुक गए। उत्सुकतावश वो किताब मैंने उठाई और पैसे चुकाकर अपने घर की ओर चल दिया।

बिस्तर पर लेटे-लेटे न जाने कितनी देर तक उसके पन्नों को मैं उलटता रहा, मगर दिन भर का थका-हारा इंसान आखिर नींद की देवी से कब तक मुकाबला कर पाता। उनींदी आँखें नींद की आगोश में कब चली गईं, मुझे इसका तनिक भी आभास नहीं मगर सुबह थोड़ा आश्चर्य इस बात पर जरूर हुआ कि किताब मेरे सिरहाने बिल्कुल करीने से रखी हुई है।

मौसम सर्दियों का और सुबह की शुरुआत चाय की गर्म चुस्कियों के साथ... अहा! शायद ये हम सभी हिन्दुस्तानी पतियों के लिए सबसे सुकून का पल होता है। मगर.. मगर... मेरे इन सुकून के चुनिंदा पलों में एक छोटा सा खलल पड़ा। और वो खलल डाला, मेरी नौ वर्षीय बेटी अनुष्का ने। रात की वही किताब अपने हाथ में लिए वो मेरे सामने बैठ गई और पूछने लगी कि ये दार्जिलिंग कहां है?

उसे तो शायद मैं टाल भी देता, मगर मेरी धर्मपत्नी जो अब तक खामोशी से अपने दैनिक काम निपटा रही थी, उसने भी उसके सवाल का दूसरा सिरा जोड़ते हुए कहा कि कब घुमाने ले जा रहे हैं हमें.. इससे पहले कि मैं कुछ बोलता वो फिर बोली कि इस बार बच्चों की गर्मी छुट्टियों में ले चलते हैं।

बस फिर क्या था.. मां बेटी की जोड़ी ने बस जिद पकड़ ली। इन्कार में दर्जनों बार जब मैं सिर हिला चुका तो मेरी चालाक धर्मपत्नी ने अपने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। मेरी तीन साल की बेटी अक्षु की तोतली जबान का अनुरोध मीठे तीर की तरह मेरे दिल में गहरे उतरता गया और जाने कब मेरा इन्कार करता सिर स्वीकार की इकरार में हिल गया, मुझे भान तक नहीं हो सका।

नियत तिथि और निश्चित समय पर हम सभी दार्जिलिंग की हसीन हरियाली से लदी पहाड़ियों के बीच पहुंच गए। दोस्तों, शायद आप मेरा विश्वास करें या न करें मगर ये जगह मेरे द्वारा देखी गई बेहद खूबसूरत जगहों में से एक है। दो-तीन दिन तक हम हर उस बेहतरीन जगहों में घूमते रहे, जिनके बारे में हमें जानकारी थी। परन्तु सफर का सबसे मजेदार हिस्सा तो वो रहा, जब हम टॉय ट्रेन में सवार हुए। यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर, 1881 से संचालित दार्जिलिंग का ये टॉय ट्रेन अपने आप में एक अजूबा है। दर्जनों स्टेशन से गुजरकर जब ये अपने मुकाम तक पहुंचता है तो ऐसा लगता है मानो कि इससे उतरना किसी गुनाह को अंजाम देने जैसा हो। वस्तुतः ये ट्रेन न्यू जलपाईगुड़ी से दार्जिलिंग तक करीबन अट्ठासी किलोमीटर का सफर सात से साढ़े सात घंटों में पूरा करती है, किंतु हमने सिर्फ घूम स्टेशन तक का सफर तय किया। मगर चौदह किलोमीटर का ये छोटा सफर किसी स्वप्न यात्रा जैसा ही था बिल्कुल। हिल कार्ट रोड के समानांतर चलती इस ट्रेन में से प्रकृति को एकदम करीब से देखने का सुखद आनंद, चारों तरफ हरियाली और सबसे खास तो बतासिया लूप की सर्पिलाकार संरचना... उफ्फ क्या कमाल और हैरतअंगेज कर देनेवाला सफर था ये। सचमुच, यूनेस्को का ये धरोहर बिल्कुल मजेदार और ऐतिहासिक भी है। इसकी ऐतिहासिक संरचना पुरानी होकर भी आजकल के नवीनतम संरचनाओं से भी ज्यादा बेहतरीन है। जरूरत है तो बस इस बात की कि देश-विदेश में मौजूद हर धरोहर की पुरजोर रक्षा हो, इन्हें संभाल कर रखा जाए। ये धरोहर वो इतिहास हैं जिनकी चमक से आज भी हमारा वर्तमान प्रकाशित है। बस इन्हें सहेज कर रखने की जरूरत है।

कौशलमय कारखाना

रवि कुमार

वरिष्ठ तकनीशियन

एम शॉप - एम 1802,

पूर्व रेलवे, लिलुआ



सवारी एवं माल डिब्बा कारखाना की सदैव जय हो
लिलुआ की धरा देश हित कार्य कौशल मय हो।।

राष्ट्र के निर्माण में यह, युद्ध के संधान में यह।

देश को जोड़ने वाली रेलवे के प्राण में यह।

भारतीयता का पोषक समृद्धि में रोजगार में यह।

उन्नीसवीं से अब तक सदी का निर्माण मय हों।

सवारी एवं माल डिब्बा कारखाना की सदैव जय हो
लिलुआ की धरा देश हित कार्य कौशल मय हो।।

पुर्जा पुर्जा निर्माण में बियरिंग, बोगी, कोच।

देश दुनिया में परचम लहरे यही दृढ़ यही सोच।

योग, कला, नाटक, साहित्य, तकनीकी का नव उद्घोष।

ईस्ट इंडिया रेल कंपनी प्रदत्त जीवन अभय हो।

सवारी एवं माल डिब्बा कारखाना की सदैव जय हो
लिलुआ की धरा देश हित कार्य कौशल मय हो।।

सर्वोत्तम कारखाना शील्ड धारक राजभाषा का उद्धारक।
बुनियादी प्रशिक्षण केंद्र यहां तुलसी कबीर स्मृति तारक।
यतीश कुमार सम कवि यहां दिनकर पुस्तकालय स्मारक।
निन नूतन प्रतिभा ज्ञान से कारखाना आलोकमय हो।।

सवारी एवं माल डिब्बा कारखाना की सदैव जय हो
लिलुआ की धरा देश हित कार्य कौशल मय हो।।

ज्ञान और विज्ञान के संग श्रम पताका को उठाये।
रेलवे के चक्र को नित नव गति से नित सजाये।

दूरदर्शी कर्मियों अधिकारियों की कर्मभूमि
लौह पथ गामी अहर्निश युगों तक जय हो विजय हो।

सवारी एवं माल डिब्बा कारखाना की सदैव जय हो
लिलुआ की धरा देश हित कार्य कौशल मय हो।।

बारिश का दर्द

आदित्य राज गुप्ता, वर्ग-9

पुत्र- आलोक कुमार गुप्ता

वरिष्ठ लेखापाल,

पूर्व रेलवे, लिलुआ



कहता है दिल बारिश का,
मैं झूम-झूम कर उतर रहा,
अब आएं कई बच्चे छुप कर अपनी माँ के नजरो से,
ये सोचकर उसका चेहरा निखर रहा।

वो संग कागज भी लाएंगे,
अपने हाथों की कलाकारी से कश्ती भी बनाएंगे,
चिट्ठी लिख किसी अंजान को,
वे दोस्तों से नाव की रेस लगाएंगे।

आह ! क्या मालूम था बारिश को,
कि ज़माना बदल गया,
सर में दर्द है, तबीयत सही नहीं,
न निकलने का बहाना बन गया।

पहुंचकर नीचे उसने बच्चों का इंतज़ार किया,
क्या ही कर सकता था वो, उसे समय ने धोखा दिया।
घर के बड़े, देख रहे हैं खिड़कियों को उन नम आँखों से,
किसी की डाँट रोक नहीं सकती थी उनको, बाहर जाने से।

मैं कैसे भूल गया, ये फोन का जमाना है,
बारिश में मस्ती का वो किस्सा पुराना है।
एक आखिरी सवाल बूंदों के मन में आया,
जो कुछ इस तरह उन्होंने कह सुनाया।

क्या कागज बचा नहीं दुनिया में?
या वो कश्ती बनाना भूल गये?
क्या बारिश अब उन्हें पसंद नहीं?
या आने का बहाना भूल गए?

कोई समझाए उन्हें,
इन्हें फोन से इश्क हो गया,
इनके दिलों में अब बारिश का,
मोहब्बत ही सो गया।

नेताजी का दिखावा

रमेश कुमार प्रसाद

कार्यालय अधीक्षक, एलआरडब्ल्यू
पूर्व रेलवे, लिलुआ



जो सच में दुखी है, उसे नहीं अपनाते हैं।
राशन बाँट के नेताजी खूब फ़ोटो खिंचवाते हैं।
राशन बाँट के नेताजी खूब फ़ोटो खिंचवाते हैं।
अरबों की लूट मचाई, कंगाल देश को बनाया,
वादे करते चुनाव के समय, फिर गायब हो जाते हैं।
राशन बाँट के नेताजी खूब फ़ोटो खिंचवाते हैं।
चावल-दाल महंगा है, गरीबों का यही कहना है,
देश खूब तरक्की कर रहा, कहकर भरमाते हैं।
राशन बाँट के नेताजी खूब फ़ोटो खिंचवाते हैं।
शिक्षा का व्यापार हो रहा, दारू का प्रचार हो रहा,
रैली में लोगों से जिन्दाबाद बोलवाते हैं।
राशन बाँट के नेताजी खूब फ़ोटो खिंचवाते हैं।
खुद का बेटा पढ़े विदेश में, मजदूर का बेटा घास खोदे,
जाति-धर्म को लेकर जनता को लड़वाते हैं।
राशन बाँट के नेताजी खूब फ़ोटो खिंचवाते हैं।

स्वच्छ धरती

अनन्या कुमारी, वर्ग-4,

सुपुत्री- श्री गोपाल कुमार

वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी (लेखा)

पूर्व रेलवे, लिलुआ



आओ मिलकर धरती को शुद्ध बनाएं,
इस धरती को प्रदूषण मुक्त बनाएं।
बंद करो ये खुद की गाड़ियां,
उपयोग में लाओ सार्वजनिक गाड़ियां।
बंद करो ये प्लास्टिक के कारखाने,
बंद करो बेवजह की बिजली जलाने।
अधिक से अधिक पेड़ लगाओ,
कई जीव हैं इस धरती से जाने वाले।
क्योंकि हम ही हैं पेड़ काटकर गिराने वाले।
आओ, मिलकर धरती को शुद्ध बनाएं,
अपने जीवन को प्रदूषण मुक्त बनाएं।

शहर में गाँव की यादें



गोपाल कुमार

वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी
लेखा विभाग, पूर्व रेलवे, लिलुआ

सुगंधी की आस लिए गाँव की, फिरता हूँ शहर में
कल्पनाकी डोर बढ़ा प्यास बुझाता हूँ शहर में

बच्ची कहती- पापा! पार्क तो शहर की लैंग्स होती है ना?
हाँ बेटी, पर गाँव की हवा तो फिर संजीवनी हुई ना?

ठहरा हुआ हूँ शहर में, कुछ हंसी हसरत लिए हुए
दिल तो कुल्लाँचे भरते हैं गाँव की आबो हवा लिए

पगडंडियाँ जो हैं, गाँव की संबल रही हरदम
सड़कें जो शहर की हैं दिल के पास नहीं हैं

ऊंची है मंजिल, ऊंची है दुकान, ऊंचा है कारोबार
मिल जाए इस भीड़ में मुकम्मल कोई जहाँ

लौट आना चाहता है जी फिर उसी मंजर के बीच
कि कष्टों के बीच भी क्या दिन थे वो मेरे

सीक और घरकौआ चलाना शौक था सब का
सोचा ना कर दे दूँ, आज बच्चों को ये खिलौना

क्या दे पाउँगा वो डगर, वो क्यारियों का किनारा
जो था तो धूल भरा, पर था कंचन-सा किनारा

हम सोचते गाँव का शहर बनने की जरूरत क्यों है?
न्याय, शिक्षा, चिकित्सा और ये व्यापार ही है क्या?

महत्वाकांक्षा, पेट पालना, आधुनिक सोच विचार है
प्रतिभा और श्रमिक पलायन क्या यही गाँव से प्यार है?



62वां वार्षिक एथलीट मीट (15.01.2025)



76वां गणतंत्र दिवस समारोह



76वां गणतंत्र दिवस समारोह



डॉ भीमराव आंबेडकर जयंती पालन (16.04.2025)



विश्व विरासत दिवस जागरूकता अभियान
(18.04.2025)



विश्व विरासत दिवस पर वि्वज प्रतियोगिता
(18.04.2025)



जीर्ण वस्त्र दान वाहन हरी झंडी (21.04.2025)



नवीन हिन्दी सेल सह दिनकर पुस्तकालय उद्घाटन
(21.04.2025)



आरोग्य योगम (28.04.2025)



अंतरराष्ट्रीय श्रम दिवस (06.05.2025)



रवींद्र जयंती समारोह (09.05.2025)



पर्यावरण सप्ताह पर नुक्कड़ नाटक (29.05.2025)



पर्यावरण सप्ताह पर एक और नुक्कड़ नाटक
(31.05.2025)



पर्यावरण सप्ताह पर क्विज़ प्रतियोगिता
(31.05.2025)



पर्यावरण सप्ताह पर निबंध प्रतियोगिता (02.06.2025)



विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण (05.06.2025)



विश्व योग दिवस (21.06.2025)



क्षेत्रीय वाक प्रतियोगिता में प्रेरणा पुरस्कार (28.07.2025)



तिमाही बैठक के दौरान पत्रिका का विमोचन
(05.08.2025)



हर घर तिरंगा अभियान (14.08.2025)



स्वतंत्रता दिवस पर राजभाषा पुरस्कार



स्वतंत्रता दिवस पर राजभाषा पुरस्कार



हिन्दी पखवाड़ा 2025 के विभिन्न प्रतियोगिता की
एक झलक



स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा पालन



सामूहिक वंदे मातरम गान (07.11.2025)



भगवान बिरसा मुंडा जयंती (15.11.2025)



लिलुआ कारखाना के गौरवमय 125 वर्ष पूर्ण पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं की एक झलक



हिन्दी काव्य संगीत कार्यक्रम (08.12.2025)



125 वर्ष पूर्ण पर मुख्य कार्यक्रम का महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे द्वारा उद्घाटन (22.12.2025)



लिलुआ कारखाना के 125 वर्ष मैसकोट का अनावरण



मुख्य कार्यक्रम की एक झलक



वीर बाल दिवस कार्यक्रम का आयोजन (26.12.2025)